गरमा पी.ओ.पी.

फसल का नाम: तरबूज (Citrullus lanatus)

तरबूज की खेती- 10 डिसमिल जमीन के लिए

तरबूज की खेती से होने वाले लाभ:

- तरबूज गरमा मौसम में उगने वाली तथा 90 से 100 दिन वाली प्रमुख तरबूज फसल है |
- इसकी खेती मुख्य फसल के रूप पुरे खेत में अच्छी नगद आमदनी के लिए लगाई जाती है |
- तरबूज पोटासियम, मेगनेसियम एवं विटामिन A, C, B1, B5 एवं B6 का मुख्या श्रोत है |
- तरबूज शारीर को गर्मी से होने वाले नुकसान से बचाता है |

खेती करने का उचित समय:

सामान्यतः इस क्षेत्र में धान कटाई के बाद तरबूज की फसल लगाई जाती है | गरमा फसल में तरबूज की खेती केलिए 10 जनवरी से 15 फ़रवरी तक तरबूज की फसल के लिए उत्तम समय माना जाता है |

जमीन का प्रकार:

- तरबूज की खेती रेतीली मिटटी से लेकर चिकनी दोमट मिट्टियो तक में की जा सकती है विशेष रूप से नदियों के किनारे रेतीली भूमि में इसकी खेती की जा सकती है, जिसका pH मान 5.5 से 7.0 तक हो उत्तम मानी जाती है |
- समतल या हल्की ढाल वाली दोइन 2 एवं दोइन 3 जमीन तथा सिंचाई की व्यवस्था होने पर टांड 3 जमीन भी तरबूज के खेती के लिए उपयुक्त होता है |

फसल का उत्पादन बढाने हेतु कुछ महत्वपूर्ण कदम:-

1. बीज के उन्नत किस्म का चुनाव

उद्देश्य:-

किस्म का चुनाव बाजार के मांग को समझ कर करना चाहिए ताकि अच्छी उपज के साथ अच्छी मूल्य (price) भी मिल सके |

बीज छंटाई या चुनाव का तरीका: -

केबल पुष्ट बीज, एक रंग एवं एक आकार का बीज चुनना चाहिए |

किस्म:- सुगर क्वीन(आयश बॉक्स), वेलकम, अनारकली इत्यादि

2. बीज उपचार

उद्देश्य

- बीज उपचार करने से बीज जनित रोग से बचाव होता है |
- मिट्टी के फफूंद से नया पौधा को बचाव होता है |
- तरीका या विधि
- बीज उपचार के लिए जैविक में बिजाम्रित से या रासायनिक में बेविस्टीन 2 ग्राम/kg या थिरम 3 ग्राम/Kg का प्रयोग अच्छा होता है |

3. बीज का दर:- 10 डिसमिल जमीन में बीज की मात्रा

- प्रति गढ़ा में 2 से 3 पौधा के आधार पर 50 ग्राम बीज प्रति 10 डिसमिल में आवश्यकता होती है |

4. नर्सरी बनाने की विधि:-

पोलीटियूब में नर्सरी का फायदा :-

- पटवन करने में किसान के समय का बचत |
- कम बिज में ज्यादा पौधा एवं स्वस्थ पौधा |
- देख-रेख में सुविधा (समय पर पटवन, निकावान, समयपर दवा का प्रयोग, पाला से बचाव) |
- समय से पहले ज्यादा उपज-ज्यादा फायदा |
- खेत खाली नहीं रहना

पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए सामग्री एवं विधि:-

सामग्री:- पोलीटूयूब, बीज, केचुवा/गोबर खाद, ट्रैकोडारमा इत्यादि

बिचड़ा तैयार करने की विधि:-

- तरबूज फसल के लिए पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए केचुवा खाद एवं मिट्टी को बराबर मात्र में मिलाना है |
- 10 डिसमिल जमीन में बिचड़ा तैयार करने के लिए खाद एवं मिट्टी के मिश्रण में 200 ग्राम ट्रैकोडारमा विरिडी के चूर्ण को मिलान है |
- तैयार मिश्रण को पोलीटूयूब में भरने के बाद एक-एक बीज डालना है |
- दुसरे या तीसरे दिन (48- 72 घंटे बाद) अंकुरण आने के बाद रिडोमिल –गोल्ड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर फ़ुहारा से छिडकाव करना है |
- दो से चार पत्ता आने के बाद NPK 1919 को 80 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिला कर सिंचाई करने से पौधे की बढ़वार अच्छी होती है |
- हर 7 दिन के अन्तराल पर एडमायर (कीटनाशक) 2 ग्राम 15 लीटर पानी में या नीमास्त्र एवं साफ़ (फुफुन्दनाशक) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या बिजमित का छिडकाव करना चाहिए |
- 20 - 21 दिन में नर्सरी में पौधा मुख्य खेत में लगाने के लिए तैयार हो जाता है |

नर्सरी में तैयार पौधे:-

5. खेत की तैयारी

- 4-5 बार जोताई कर मिट्टी को भुरभुरा कर जमीन समतल कर लेना है |
- जमीन में ढलान के हिसाब से सिंचाई नाला होना चाहिए |
- गोबर खाद 200 केजी का प्रयोग प्रति 10 डेसिमल में करना चाहिए |
- अंतिम जोताई में DAP एवं पोटास की पूरी मात्रा को प्रारंभिक डोज़ के रूप में मिला कर जमीन को तैयार कर लेना चाहिए |

6. मुख्य खेत में लगाने की विधि **:-**

- तरबूज फसल के पौधों को नर्सरी से 30 से 35 दिन बाद मुख्य खेत में लगाना चाहिए |
- इसे लगाने के लिए कतार से कतार 4 फिट पौधे से पौधे की दुरी 4 फिट रखना चाहिए |
- रोपाई के समय पौधा के जड़ को बिजमित/बेविस्टीन के घोल में डूबकर रोपाई करना है, इससे फुफुन्द जनित बीमारी से बचाव होता है |
- रोपाई करने के लिए 1 X 1 X 1 फिट का गढ़ा बनाना चाहिए एवं प्रति गढ़े में 200 ग्राम गोबर खाद को मिट्टी में मिला कर पौधों की रोपाई करनी चाहिए |
- रोपाई के बाद मिट्टी को हल्का से दबाना है ताकि पौधा खड़ा हो सके |
- रोपाई के बाद नमी के लिए एक मग पानी प्रति गड्ढा में देना है (जरुरत देखकर ही पानी देना है)
- तना के पास कि मिट्टी को थोड़ा उचा रखना चाहिए ताकि तना के पास पानी न जमे |

7. खाद/उर्वरक का प्रयोग**:**

- 10 डिसमिल जमीन में तरबूज फसल फसल के लिए 2-3 क्विंटल सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद खेत में अंतिम जुताई के समय मिला देना चाहिए।

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन 50 किलोग्राम, फास्फोरस- 40 किलोग्राम एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर के दर से देना चाहिए |

10 डिसमिल जमीन के लिए रासायनिक खाद की मात्रा:-

पोषक तत्वा	खाद की मात्रा		
• नाइट्रोजन	• 5 किलो	• यूरिया	• 7 किलो
• फोस्फोरस	• 4 किलो	• DAP	• 9 किलो
• पोटास	• 4 किलो	• पोटास	• 6 किलो

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन का आधा भाग तथा फोस्फोरस एवं पोटास का पूरा भाग खेत तैयार करते समय प्रारंभिक (बेसल) डोज़ के रूप में करना चाहिए | नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो समान विभाजन में देना है - रोपाई के 30 दिनों बाद और रोपाई के 50-60 दिनों बाद ।
- पौधा में फुल आते समय सूक्ष्मपोषक तत्व का छिडकाव करें ।

8. सिंचाई प्रबंधन:

- तरबूज फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में कम से कम 3 से 4 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है | मिट्टी के प्रकार को देखते हुए सिंचाई की संख्या बढ़ भी सकती है |
- फल का आकार बड़ा होने के बाद सिंचाई रोक देनी चाहिए |
- अगर फसल लगते समय मिट्टी में नमी कम हो तो हलकी सिंचाई जरुर करनी चाहिए |

9. निकाई – गुड़ाई एवं खर-पतवार नियंत्रण:

- 15 – 20 दिन पर घास का निकासी बेहद जरुरी है |
- घास निकाई के बाद जैविक खाद का प्रयोग करने से उपज बढ़ता है |

10. तरबूज फसल के फसल में होने वाले मुख्य रोग एवं कीट प्रबंधन:

रोग का नाम	रोग का लक्षण	उपचार विधि
पत्ता एवं तना गलन	• यह बीमारी अत्यधिक गीलापन होने के कारण पौधों के उगने के तुरंत बाद या कुछ दिन बाद शुरू होती है।	• अच्छा जल निकास प्रबंधन से काफी इस बीमारी को कम किया जाता है। • ट्रईकोडरमा विरड़ी (4 ग्राम / किलो) से बुआई से 24 घंटे पहले बीज को उपचारित करें। • ब्लू कॉपर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। • जैविक फुफुन्द नाशक के रूप में महुआसत्र, सोठ्स्त्र 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर हर 10 दिन के अन्तराल पर प्रयोग करना चाहिए	

तना सूखना या पौधा मुरझाना 	• यह जीवाणु जनित बीमारी है | • इस रोग से ग्रसित पौधे अचानक मुरझा कर मर जाते हैं	• अच्छा जल निकास प्रबंधन से काफी इस बीमारी को कम किया जाता है। • क्रोसिन एजी 1 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी में मिला कर छिडकाव करना चाहिए |
पौडारी एवं डाउनी मिल्ड्यू 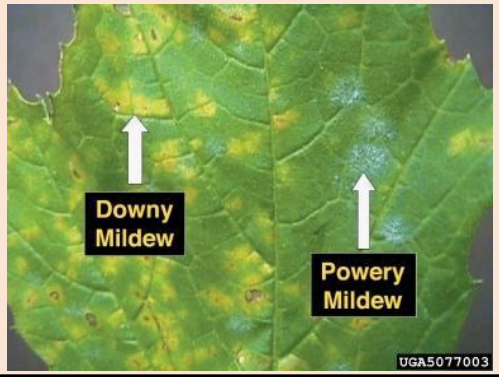	• यह एक फुफुन्द जनित बीमारी है | इस बीमारी में पत्तों के ऊपर सफ़ेद पौडर की तरह का दाग या पत्तीओं के किनारे जले हुए सा दिखाई देता है|	• ट्रईकोडरमा विरड़ी (4 ग्राम / किलो) से बुआई से 24 घंटे पहले बीज को उपचारित करें। • ब्लू कॉपर/साफ़/ सिक्सार 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। • जैविक फुफुन्द नाशक के रूप में महुआसत्र, सोठ्स्त्र 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर हर 10 दिन के अन्तराल पर प्रयोग करना चाहिए |

Leaf Curl Virus (पत्ती सिकुरण) 	• संक्रमित पौधों की पत्तियां छोटी होती हैं और ऊपर की ओर मुड़ी पिली दिखने लगती हैं • पौधा बौना दिखाई देता है • आमतौर पर संक्रमित पौधों पर फूल विकसित नहीं हो पाते हैं	• संक्रमित पौधों को निकाल देना चाहिए और आगे फैलने से बचने के लिए इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए | • सफ़ेद मक्खी को पकड़ने के लिए Yellow sticky Trap 12 इकाई/ हे के हिसाव से खेत में लगाये | • जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए | • इस रोग से बचाव के लिए पौधे के 2 पत्ता अवस्था में एकतारा 1 ग्राम 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें एवं 15 दिन के बाद कोंफिडोर 1 मिली लीटर 3 लीटर पानी में घोल कर 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर 3 से 4 बार करें |
तरबूज में कीट प्रबंधन:-		
Fruit Borer- फल छेदक	• यह कीट फलों में छेदकर इनके पदार्थ को खाती हैं तथा आधी फल से बाहर लटकती नजर आती है |	• संक्रमित फलों को इकट्ठा करके इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए | • 12 इकाई / हेक्टेयर में फेरोमोन ट्रैप लगाएं

	• एक कीट कई फलों को नुकसान पहुंचाती हैं	• जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए |
जुगनूकीट 	• यह कीट पत्तियों को खाता है जिससे पौधों की बढ़त कम हो जाती है एवं उपज भी प्रभाबित होता है |	• जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए | • एकतारा 1 ग्राम 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें एवं 15 दिन के बाद कोंफिडोर 1 मिली लीटर 3 लीटर पानी में घोल कर 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर 3 से 4 बार करें |